2) *तब अपने स्नेह में प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं भावातिरेक से ही निश्चल हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं; परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।*

## 37-5 vroLrq

महादेवी वर्मा द्वारा लिखे गये रेखाचित्र उन साधारण लोगों की असाधारण कहानियां कहते हैं जो अभावों के बीच जीते हुए, तरह-तरह के कष्ट उठाते हुए और अत्यंत विपरीत परिस्थितियों के बीच भी अपने अंदर की मनुष्यता से एक ऐसे व्यक्तित्व के रूप में उभरते हैं जो महान से महान व्यक्तियों की महानता से कमतर नहीं है। 'घीसा' भी एक ऐसा ही रेखाचित्र है जिसका केंद्रीय चरित्र घीसा और उसकी विधवा मां का जीवन संघर्ष और उस संघर्ष के बीच भी अपने आत्मसम्मान और अपने मनुष्यत्व को बनाए रखने की उनकी कोशिश ही इस रेखाचित्र को अविस्मरणीय बना देती है।

इस रेखाचित्र के केंद्र में घीसा है और महादेवी ने उसी का अत्यंत मर्मस्पर्शी और संवेदनशील शब्दचित्र निर्मित किया है। यह है तो रेखाचित्र लेकिन इसे कहानी की तरह गढ़ा गया है। रेखाचित्र को तीन भागों में बांटकर देखा जा सकता है। रेखाचित्र का पहला भाग वह है जब महादेवी जी झूंसी के खंडहरों के पास के एक गाँव में एक पेड़ के नीचे गाँव के बच्चों को पढ़ाने का निर्णय लेती है और उस पाठशाला में पढ़ने के लिए घीसा अपनी मां के साथ आता है। घीसा एक पिछड़ी जाति (कोरी) की विधवा स्त्री का बेटा है और अपने पिता की मृत्यु के छह माह बाद पैदा होने के कारण उसकी मां के चरित्र को लेकर अनर्गल बातें गाँव में व्याप्त हैं। महादेवी पर भी यह दबाव है कि घीसा को स्कूल में भर्ती न किया जाए लेकिन गाँव वालों की परवाह किए बिना महादेवी घीसा को स्कूल में भर्ती कर लेती है।

रेखाचित्र का दूसरा भाग स्कूल में पढ़ते हुए घीसा के व्यवहार के बारे में है। इस भाग में घीसा



का पढ़ाई के प्रति समर्पण, गुरु के प्रति गहरा भक्तिभाव और उसव
उभरकर आती है। यहां महादेवी जी ने छोटे-छोटे लेकिन मार्मिक
व्यक्तित्व को उभारने की कोशिश की है। घीसा की मां एक मामूली
के घर पर लिपाई-पोताई का काम कर अपना और अपने बेटे का जीव
द्वारा स्कूल के आंगन को साफ करना, साफ-सफाई का आदेश मिलन
पहन के आ जाना। गुरु द्वारा जलेबी मिलने पर उसे अपनी मां और
बांटने की कोशिश करना, यह जानकर कि शहर में दंगा फैल गया है,
में भी गुरु जी को गाँव में ही रोकने की कोशिश करना और यह जान
से बच्चे उनके आसरे पर है, उनको जाने देना आदि कई प्रसंगों के
के कई पहलू सामने आते हैं। उसकी विनम्रता, उसकी आज्ञाकारिता
व्यक्तित्व की इन्हीं विशेषताओं की वजह से धीरे-धीरे महादेवी वर्मा
लेता है।

रेखाचित्र का तीसरा और अंतिम भाग महादेवी वर्मा का गाँव से विद
की वजह से महादेवी जी को लंबे समय तक स्कूल बंद रखना है औ

Scanned with CamScanner

ख) "क्या नरक में निवास स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई है ?"

१) नरक में निवास स्थान की समस्या कैसे हल हुई ?

उत्तर: नरक में पिछले कुछ सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए थे | कई इमारत के ठेकेदार हैं, जिन्होंने धरती पर पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं थी | बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए थे, जिन्होंने ठेकेदारों के साथ मिलकर पंचवर्षीय योजनाओं का पैसा खाया था | ओवेरसियर हैं, जिन्होंने उन मजदूरों की हाजिरी भरकर पैसा हड़पा था, जो कभी काम पर गए ही नहीं | इन लोगों ने बहुत जल्दी नरक में कई इमारतें तान दी हैं | इससे निवास स्थान की समस्या हल हो गयी |

२) भोलाराम के जीव को इनकम टैक्स वाले क्यों नहीं रोकते ?

उत्तर: भोलाराम गरीब व्यक्ति था | भुखमरा था | उसकी कोई इनकम ही नहीं थी तो टैक्स कहाँ से लगता | इसलिए इस बात की कोई संभावना ही नहीं थी कि उसके जीव को इनकम टैक्स वाले रोकते |

३) धर्मराज ने नारद मुनि को क्या समस्या बताई ?

उत्तर: धर्मराज ने नारद मुनि को अपनी समस्या बताते हुए कहा कि भोलाराम नाम के आदमी की पाँच दिन पहले मृत्यु हुई थी | उसके जीव को दूत यमलोक ला रहा था कि जीव रास्ते में चकमा देकर भाग गया | सारा ब्रह्मांड छान डाला गया है पर जीव कहीं नहीं मिला | ऐसा होने लगेगा तो पाप-पुण्य का भेद ही मिट जाएगा |

Scanned with CamScanner

३) धर्मराज क्यों परेशान थे ?
उत्तर: धर्मराज ने एक यमदूत को भोलाराम के जीव को पकड़ के लाने के लिए धरती पर भेजा था | भोलाराम को शरीर छोड़े पाँच दिन हो गए थे और वह यमदूत के साथ यमलोक में आने के लिए रवाना हो चुका था पर अभी तक पहुँचा नहीं था | यमदूत भी उस दिन से लापता था | धर्मराज लाखों वर्षों से असंख्य आदमियों को कर्म तथा सिफारिश के आधार पर स्वर्ग या नरक में निवास स्थान देते आ रहे थे पर ऐसा कभी नहीं हुआ था | इसलिए वह परेशान थे |

४) यमदूत भोलाराम के जीव को साथ क्यों नहीं ला पाया था ?
उत्तर: भोलाराम ने जैसे ही देह त्यागी, यमदूत ने उसे पकड़ा और यमलोक की यात्रा आरम्भ की | नगर के बाहर ज्यों ही उसे लेकर यमदूत एक तीव्र वायु तरंग पर सवार हुआ, त्यों ही भोलाराम उसके चंगुल से छूटकर न जाने कहाँ गायब हो गया | यमदूत ने पाँच दिनों तक पूरा ब्रह्माण्ड छान मारा पर भोलाराम के जीव का कहीं पता नहीं चला | इसलिए यमदूत अपने साथ उसे नहीं ला पाया |

ख) "क्या नरक में निवास स्थान की समस्या अभी हल नहीं हुई है ?"
१) नरक में निवास स्थान की समस्या कैसे हल हुई ?
उत्तर: नरक में पिछले कुछ सालों में बड़े गुणी कारीगर आ गए थे | कई इमारत के ठेकेदार हैं, जिन्होंने धरती पर पूरे पैसे लेकर रद्दी इमारतें बनायीं थी | बड़े-बड़े इंजीनियर भी आ गए थे, जिन्होंने ठेकेदारों के साथ मिलकर

Scanned with CamScanner

पड़ता है | तब जाकर कहीं सरकारी कर्मचारी काम करते हैं | इसलिए वाक्य में सरकारी कार्यालय के लिए मंदिर शब्द का प्रयोग हुआ है |

३) 'भेंट' किस लिए माँगी जा रही है ?
उत्तर: यहाँ भेंट का तात्पर्य रिश्वत से है | सरकारी कार्यालय के बड़े साहब नारद मुनि को उदाहरण देकर समझा रहे हैं कि जिस तरह मंदिर में भगवान को भेंट चढ़ाया जाता है| उसी तरह सरकारी कार्यालयों में भी काम कराने के लिए भेंट चढ़ाना पड़ता है | यदि भोलाराम की पेंशन की फाइल पास करानी है तो नारद जी को कुछ न कुछ रिश्वत देनी पड़ेगी | बड़े साहब भोलाराम के परिवार को पेंशन दिलाने के लिए भेंट माँग रहे हैं |

४) वक्ता ने समस्या के समाधान का क्या उपाय बताया ?
उत्तर: वक्ता एक सरकारी कार्यालय के बड़े साहब हैं | वो भोलाराम के पेंशन की फाइल को पास करने के लिए नारद मुनि से रिश्वत लेना चाहते हैं | उन्होंने नारद मुनि से कहा कि पेंशन अगर जल्दी चाहिए तो इसके बदले में उन्हें अपनी वीणा देनी पड़ेगी | उनकी एक पुत्री है जो गाना बजाना सीखती है | उस वीणा से वो जल्दी संगीत सीख जायेगी | इस प्रकार वक्ता ने समस्या के समाधान के लिए रिश्वत देने का उपाय बताया |

च) कौन पुकार रहा है मुझे ?
१) भोलाराम का जीव कहाँ मिला ?
उत्तर: भोलाराम का जीव उसके पेंशन की फाइलों में छुपा हुआ था | वह पेंशन की दरख्वास्तों में अटका था | नारद जी को वो सरकारी दफ्तर में फाइलों के अंदर मिला |

Scanned with CamScanner

च) कौन पुकार रहा है मुझे ?

१) भोलाराम का जीव कहाँ मिला ?

उत्तर: भोलाराम का जीव उसके पेंशन की फाइलों में छुपा हुआ था | वह पेंशन की दरख्वास्तों में अटका था | नारद जी को वो सरकारी दफ्तर में फाइलों के अंदर मिला |

२) भोलाराम स्वर्ग क्यों नहीं जाना चाहता था ?

उत्तर: भोलाराम ने कई वर्षों तक पेंशन पाने के लिए संघर्ष किया | कई दरख्वास्त दिए पर रिश्वत न दे पाने के कारण उसकी पेंशन मंजूर नहीं हुई | मरने के बाद भी उसका मन पेंशन की फाइलों में ही लगा रहा | वह पेंशन की दरख्वास्तों में अटका था इसलिए स्वर्ग नहीं जाना चाहता था |

३) साहब क्यों कुर्सी से डरकर लुढ़क गए ?

उत्तर: भोलाराम ने कई वर्षों तक पेंशन पाने के लिए संघर्ष किया | कई दरख्वास्त दिए पर रिश्वत न दे पाने के कारण उसकी पेंशन मंजूर नहीं हुई | मरने के बाद भी उसका मन पेंशन की फाइलों में ही लगा रहा | इसलिए उसका जीव उन फाइलों में ही जा छिपा था | नारद जी से रिश्वत लेने के बाद साहब ने उस की सौ-डेढ़-सौ दरख्वास्तों से भरी फाइल अपने टेबल पर मँगाई | वहाँ नारद जी ने जैसे ही जोर से भोलाराम का नाम लिया तो सहसा फाइल में से आवाज आयी "कौन पुकार रहा है मुझे ? पोस्टमैन है क्या ? पेंशन का आर्डर आ गया ? " मरे हुए व्यक्ति की आवाज फाइल में से सुनकर साहब डरकर कुर्सी से लुढ़क गए

Scanned with CamScanner

आवाज आयी "कौन पुकार रहा है मुझे ? पोस्टमैन है क्या ? पेंशन का आर्डर आ गया ? " मरे हुए व्यक्ति की आवाज फाइल में से सुनकर साहब डरकर कुर्सी से लुढ़क गए |

४) सरकारी कार्यालयों में बढ़ते भ्रष्टाचार पर एक अनुच्छेद में अपने विचार लिखिए | (2009)
उत्तर: भारत में सरकारी दफ्तरों में बहुत ज्यादा रिश्वतखोरी चलती है | बिना रिश्वत दिए कोई भी काम कराना लगभग नामुमकिन है | इसी व्यवस्था के कारण सरकार द्वारा बनाई गयी योजनाओं का लाभ गरीबों को नहीं मिलता और वो भूखे मरते हैं | हर काम, हर आवेदन एक फाइल बन कर रह जाती है | वह फाइल इस टेबल से उस टेबल, इस कर्मचारी से उस कर्मचारी तक घुमती रहती है | उन फाइलों का निपटारा तब तक नहीं हो पाता जब तक सरकारी कर्मचारी को रिश्वत न मिले | सरकारी कार्यालयों के इस भ्रष्टाचार तथा निकम्मेपन के कारण देश का लोकतंत्र अन्दर से खोखला हो गया है |

१) नारद जी को सरकारी दफ्तर में हुई परेशानी हमारे देश की कौन सी बुराई की ओर संकेत करती है ?
उत्तर: भ्रष्टाचार हमारे देश में भष्मासुर की तरह फ़ैल गया है | बिना रिश्वत दिए कोई काम नहीं होता | प्रस्तुत पाठ में नारद जी भी बिना रिश्वत दिए भोलाराम की पेंशन की फाइल पास नहीं करा पाए | इस व्यंग्य द्वारा लेखक ने संकेत किया है कि रिश्वत दिए बिना कोई भी शरीफ व्यक्ति सरकारी कार्यालयों से अपना काम नहीं करा सकता | भले मनुष्य के प्राणों का ही सवाल क्यों न हो, पैसे के बिना कोई कार्य नहीं होता | भ्रष्टाचार के दानव ने देश के विकास और देशवासियों के चरित्र, दोनों को निगल लिया है |

Scanned with CamScanner

पैसे के बिना कोई काम नहीं होता। भ्रष्टाचार के दानव ने देश के विकास और देशवासियों के चरित्र, दोनों को निगल लिया है।

२) हमारे पुराणों तथा शास्त्रों के अनुसार धर्मराज कौन सी व्यवस्था संभालते हैं ?
उत्तर: हमारे पुराणों तथा शास्त्रों के अनुसार धर्मराज अथवा यमराज, यमलोक के देवता हैं जहाँ मनुष्य मृत्यु के बाद जाता है। इसलिए उन्हें मृत्यु का देवता भी कहा जाता है। यमलोक में मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार स्वर्ग या नरक भेजा जाता है। यदि मनुष्य ने धरती पर अच्छे कर्म किये हैं तो उसे स्वर्ग भेजा जाता है, यदि उसके कर्म बुरे हैं तो धर्मराज उसे नरक में भेजकर कठोर दंड देते हैं। इस प्रकार मनुष्य के कर्मों के अनुसार उसे फल देने का काम धर्मराज का है।

३) इमारत के ठेकेदारों, इंजीनियरों तथा ओवरसीयरों का नरक जाना क्या संकेत कर रहा है ?
उत्तर: हमारे देश में ठेकेदारों, इंजीनियरों तथा ओवरसीयरों ने मिलकर देश के लिए बननेवाली सडकों, इमारतों तथा दूसरे निर्माण कार्यों में बहुत घोटाले किये हैं। रिश्वत खाकर घटिया दर्जे का कार्य किया जाता है जिससे कई दुर्घटनाएँ हुई हैं तथा अनगिनत लोगों की जान गयी है। इनके बुरे कर्मों के कारण मरने के बाद धर्मराज ने इन्हें नरक भेज दिया। इस प्रकार इमारत के ठेकेदारों, इंजीनियरों तथा ओवरसीयरों का नरक जाना अप्रत्यक्ष रूप से भारत में फैले भ्रष्टाचार पर करारा व्यंग्य है।

Scanned with CamScanner

उसकी मां को गाँव वालों के लिए अछूत बना दिया था और उसके चरित्र को लेकर तरह-तरह की बातें की जाती थीं। यहां तक कि उसे काम के लिए दूसरे गाँवों में जाना पड़ता था। लेकिन वह स्वाभिमानी स्त्री न झुकने के लिए तैयार हुई और न दबने के लिए।

घीसा ऐसी माता का बेटा था और उसे अपनी मां के कष्टों, घर के अभावों का ज्ञान था। इसलिए उसमें विनम्रता और दृढ़ता एक साथ थी। उसमें एक सहज, स्वाभाविक विनम्रता थी लेकिन जरूरत पड़ने पर वह पूरी दृढ़ता के साथ अपनी बात पर कायम रह सकता था। दंगों के दौरान गुरु जी को शहर नहीं जाना चाहिए क्योंकि इसमें खतरा है। पिछले साल दंगों में दो मल्लाहों के साथ हुई दुर्घटना उसे अब भी याद थी इसलिए वह नहीं चाहता था कि गुरु जी जान जोखिम में डालकर शहर जाएँ। अपनी इस बात से उसे डिगाना लगभग नामुमकिन था लेकिन जब गुरु जी ने उसे बताया कि शहर में भी घीसा जैसे बहुत से बच्चे अपने मां-बाप से दूर उनके आसरे पर रहते हैं और ऐसे वक्त अगर वह उनके पास नहीं हुई तो क्या यह ठीक होगा। इस बात को सुनकर घीसा की सारी दृढ़ता क्षण भर में गायब हो जाती है। वह जानता है कि उन बच्चों को अभी गुरु जी की जरूरत है और उन्हें यहां रोकना किसी भी तरह उचित नहीं है। ऐसे कई प्रसंग घीसा के व्यक्तित्व को साधारणता से असाधारणता में रूपांतरित करते चलते हैं।

रेखाचित्र का अंतिम प्रसंग एक तरह से घीसा के प्रेम, त्याग और गुरुभक्ति का अन्यतम उदाहरण है जब घीसा अपनी गुरु जी को विदाई के समय भेंट के रूप में देने के लिए अपना नया कुरता देकर उसके बदले में तरबूज लेकर आता है। महादेवी जानती थी कि घीसा की मां की हैसियत ऐसी नहीं है कि वह तरबूज खरीद सके इसलिए उन्हें लगता है कि कहीं घीसा किसी के खेत से तो चुराकर नहीं लाया है। लेकिन जब उन्हें वास्तविकता मालूम पड़ती है तो वह अंदर तक हिल जाती है। उस समय की अपनी मनःस्थिति को इन शब्दों में बयान करती हैं, *"और तब अपने स्नेह से प्रगल्भ उस बालक के सिर पर हाथ रखकर मैं भावातिरेक से ही निश्चल हो रही। उस तट पर किसी गुरु को किसी शिष्य से कभी ऐसी दक्षिणा मिली होगी, ऐसा मुझे विश्वास नहीं। परंतु उस दक्षिणा के सामने संसार में अब तक सारे आदान-प्रदान फीके जान पड़े।"*

लेकिन इस अंत का चरम उस अंतिम परिच्छेद में है जब कुछ महीनों बाद महादेवी जी उस गाँव में लौटती हैं तो उन्हें मालूम पड़ता है कि घीसा की मौत हो चुकी है। लेखिका यह तो नहीं बताती कि उसकी मृत्यु कैसे हुई। यह बताने लायक साहस वह अपने में नहीं पाती लेकिन उसका संकेत इस रूप में देती है कि *"उस छोटे जीवन का उपेक्षित अंत"* कैसे हुआ वह कभी भविष्य में बता पाएगी। छोटे जीवन के उपेक्षित अंत से स्पष्ट है कि गरीबी और सामाजिक उपेक्षा ने ही अंततः घीसा की जान ली होगी जिसे स्वयं महादेवी वर्मा ने घीसा और उसकी मां के जीवन में देखा था और जिसके कई चित्र उन्होंने रेखाचित्र में अंकित किये हैं।

रेखाचित्र में संस्मरण और कहानी दोनों की विशेषताएं निहित होती है। इस रेखाचित्र में भी हम इन दोनों विशेषताओं को देख सकते हैं। यह कहानी की तरह काल्पनिक कथानक पर आधारित नहीं है वरन महादेवी जी के जीवन में आए सचमुच के लोगों से संबंधित रचना है। घीसा कोई काल्पनिक पात्र नहीं है और न ही वह गाँव जहां जाकर महादेवी वर्मा ने कुछ अवधि तक गरीब बच्चों को पढ़ाया था। घीसा उन्हीं में से एक था। लेकिन इस संस्मरण को उन्होंने संस्मरण की तरह नहीं बल्कि कहानी की तरह लिखा है। कहानी की तरह इसमें भी हम कथावस्तु का आरंभ, विकास और अंत देख सकते हैं। इस रेखाचित्र में घीसा के जीवन के बारे में जो जानकारी दी गयी है उतने तक ही रचनाकार ने अपने को सीमित रखा है। यह अनावश्यक विस्तार में नहीं गया है और न ही बाद में क्या हुआ उसे बताया है जबकि संस्मरण के तौर पर वह इसे बता सकती थी लेकिन तब रचना का प्रभाव कम हो सकता था। अपने वर्तमान रूप में 'घीसा' एक अविस्मरणीय रेखाचित्र बन गया है और उसका पात्र घीसा एक अविस्मरणीय पात्र।

## ck/k i'u

1. रेखाचित्र 'घीसा' में किन-किन विधाओं की विशेषताएं दिखायी देती हैं?
   क) कहानी की
   ख) कविता की

Scanned with CamScanner

का पढ़ाई के प्रति समर्पण, गुरु के प्रति गहरा भक्तिभाव और उसकी निश्छल संवेदनशीलता उभरकर आती है। यहां महादेवी जी ने छोटे-छोटे लेकिन मार्मिक प्रसंगों के द्वारा घीसा के व्यक्तित्व को उभारने की कोशिश की है। घीसा की मां एक मामूली मजदूर स्त्री है जो दूसरों के घर पर लिपाई-पोताई का काम कर अपना और अपने बेटे का जीवन यापन करती है। घीसा द्वारा स्कूल के आंगन को साफ करना, साफ-सफाई का आदेश मिलने पर धुले हुए गीले कपड़े पहन के आ जाना। गुरु द्वारा जलेबी मिलने पर उसे अपनी मां और अपने कुत्ते के बीच बराबर बांटने की कोशिश करना, यह जानकर कि शहर में दंगा फैल गया है, अपनी बीमारी की अवस्था में भी गुरु जी को गाँव में ही रोकने की कोशिश करना और यह जानकर कि शहर में भी बहुत से बच्चे उनके आसरे पर है, उनको जाने देना आदि कई प्रसंगों के माध्यम से घीसा के जीवन के कई पहलू सामने आते हैं। उसकी विनम्रता, उसकी आज्ञाकारिता और उसकी दृढ़ता। उसके व्यक्तित्व की इन्हीं विशेषताओं की वजह से धीरे-धीरे महादेवी वर्मा के मन में घीसा जगह बना लेता है।

रेखाचित्र का तीसरा और अंतिम भाग महादेवी वर्मा का गाँव से विदा लेना है। अपनी की वजह से महादेवी जी को लंबे समय तक स्कूल बंद रखना है और इसकी सूचना वह बच्चों को दे देती है। कुछ बच्चे उदास हो जाते हैं तो कुछ छुट्टी की बात से प्रसन्न हो जाते हैं। छुट्टियों के दिन में किताबों को संभालकर रखना, छुट्टी के दिनों को गिनना और कई तरह की समस्याएं बच्चे अपनी गुरु के सामने रखते हैं। लेकिन इस पूरी चर्चा में घीसा पाठशाला से गायब हो जाता है और जब महादेवी जी घर जाने के लिए नदी के तट पर पहुंचती है तो उनको शाम के धुंधलके में घीसा नंगे बदन आता दिखायी देता है। उसके हाथ में बड़ा सा तरबूज है जो वह अपनी गुरु को विदा स्वरूप भेंट करने के लिए लाया है। तरबूज को देखकर अचानक महादेवी वर्मा के मन में संदेह होता है कि कहीं घीसा इसे किसी के खेत से चुराकर तो नहीं लाया है। घीसा बताता है कि यह तरबूज वह अपने नये कुरते के बदले में लाया है जिस पर खेत की रखवाली करने वाले बच्चे की बहुत दिनों से नजर थी। महादेवी को वह यह भी बताता है कि अब गर्मी के दिन आने वाले हैं और गर्मियों में वह कुरता नहीं पहनता इसलिए उसकी उसे कोई जरूरत नहीं थी। वह यह भी कहता है कि गुरु से झूठ बोलना भगवान से झूठ बोलना है। यह भेंट ही यह बताने के लिए पर्याप्त है कि गुरुजी का विछोह घीसा के लिए बहुत बड़ी व्यथा है और इससे गुरु के प्रति गहरी श्रद्धा और प्रेम का भी प्रमाण मिलता है। महादेवी कहती है कि इतनी मूल्यवान भेंट आज तक किसी शिष्य ने अपने गुरु को नहीं दी होगी। महादेवी दुखी मन से गाँव से और घीसा से विदा लेती है। कुछ महीनों बाद जब वह वापस लौटती है तो पाती है कि घीसा को भगवान ने पढ़ने से सदा सदा के लिए छुट्टी देकर अपने पास बुला लिया है। इस प्रकार घीसा महादेवी के जीवन से सदा-सदा के लिए विदा हो जाता है।

'घीसा' है तो एक रेखचित्र लेकिन कथारस से सराबोर। महादेवी वर्मा के अन्य रेखाचित्रों की तरह यहां भी एक अत्यंत साधारण जीवन से आये पात्र को जिसके घर, परिवार और जीवन में ऐसा कुछ भी नहीं है जिसे असाधारण कहा जा सके, अपनी रचना के केंद्र में रखती हैं। उस साधारण से प्रतीत होते जीवन के ऐसे मार्मिक प्रसंगों को वे अपनी रचना में उद्घाटित करती चलती हैं कि वह असाधारणता से चमक उठता है। घीसा के जीवन के साथ भी यही होता है। एक बहुत ही गरीब ग्रामीण विधवा स्त्री जो निम्न जाति (कोरी) की भी है और जिसके प्रति गाँव में न किसी की सहानुभूति है और न ही दयाभाव। वह स्त्री हर तरह के कष्ट उठाकर अपने और अपनी एकमात्र संतान घीसा का मेहनत मजूरी करते हुए पालन-पोषण करती है। उस स्त्री की इच्छा है कि उसकी संतान कुछ पढ़ लिख जाए लेकिन गाँव में पढ़ाने की कोई व्यवस्था नहीं है और ऐसे में महादेवी वर्मा पहुंचती है और बच्चों को पढ़ाने का निश्चय करती है। घीसा की मां भी घीसा को लेकर पहुंचती है लेकिन गाँव के लोग नहीं चाहते कि घीसा उनके बच्चों के साथ पढ़े। उनके अनुसार घीसा एक बदचलन स्त्री का बेटा है और ऐसे बच्चे के साथ पढ़ने से उनके बच्चों पर भी बुरा असर पड़ेगा। घीसा की मां की बदचलनी का सबूत यह था कि घीसा का जन्म अपने पिता की मृत्यु होने के छह माह बाद हुआ था। दूसरा सबूत यह था कि जाति-बिरादरी के कायदे के अनुसार घीसा की मां को पुनर्विवाह कर लेना चाहिए था लेकिन वह शादी के ऐसे इच्छुकों को लौटा चुकी थी क्योंकि स्वयं उसके अनुसार वह एक शेर की बीबी थी अब किसी सियार के साथ कैसे बंध सकती है। इन दो बातों ने घीसा और

Scanned with CamScanner